तिथि
21.4.2020

शीर्षक क्रम ①
Topic Sl. No. 30

स्नातक प्रथम खंड
हिन्दी (प्रतिष्ठा)
B.A Hindi (Hons)
D1.

घनानंद का प्रेम निरूपण

प्रेम एक सहज मानवीय वृत्ति है, जो किसी व्यक्ति के रूप, सौंदर्य, गुण या सामीप्य के कारण उत्पन्न होती है। प्रेम का संबंध प्रिय से है। प्रिय का अर्थ है - तृप्तिदायक।

मूलत: घनानंद प्रेम सौंदर्य के समर्थ कवि हैं पर उन्होंने प्रेम का शास्त्रीय पद्धतियों से निरूपण कहीं नहीं किया। उनका स्वच्छंद प्रेम शास्त्रीय रूढ़ियों के प्रति सहज विद्रोह करता दिखाई देता है। यह प्रेम लौकिक रीति से शुरू होकर राधा-कृष्ण के अलौकिक रस तक विस्तार पाये हुए हैं। प्रेम में विरह पीड़ा की शक्ति ने इस कवि को नया भाव लोक प्रदान किया। आ० रामचन्द्र शुक्ल ने लिखा है कि "विशुद्धता के साथ प्रौढ़ता और माधुर्य भी अपूर्व हैं। ये वियोग शृंगार के प्रधान मुक्तक कवि हैं। प्रेम की पीर, लेकर ही इनकी वाणी का प्रादुर्भाव हुआ है।" प्रेमी घनानंद सुजान (प्रेमिका) तथा सुजान (राधा-कृष्ण) को ध्यान में रखकर पुकारते मिलते हैं। लौकिक अर्थ में सुजान प्रेमिका के लिए और भक्तिभाव में सुजान राधाकृष्ण के लिए प्रतीक रूप में मानने चाहिए। कारण यह चातक भाव का प्रेम है।

Scanned with CamScanner

रीतिकाव्य जिसे शृंगार काव्य भी कह दिया (2)
जाता है - वास्तव में प्रेमकाव्य नहीं है। अपितु यह सिर्फ भोग-विलास का काव्य है, जिसमें नारी को उपभोग की वस्तु ही समझा गया है। किंतु घनानंद ने (रीति मुक्त कवियों ने भी) इस भोग-विलास को अपना हेतु न बनाकर स्वच्छंद प्रेम को अपने काव्य की विषयवस्तु बनाया है। यह प्रेम अनुभूति-प्रधान है, भावना प्रधान है, मांसल है, शरीरी है और मानसिक है। यह बात कही जा चुकी है कि घनानंद एक रूपवती वेश्या सुजान के प्रेम में बंधे हुए थे। सुजान के प्रेम ने ही उन्हें प्रेम की समस्त अवस्थाओं में से गुजरने का अवसर प्रदान किया। वैसे मुख्य रूप से घनानंद का प्रेम विरहप्रधान है। सुजान ने घनानंद के साथ जब मथुरा जाने से इंकार कर दिया तब वे सारी उम्र अकेले ही रहे और अपने प्रेमानुभवों और प्रेमानुभूतियों को अभिव्यक्त करते रहे। प्रेयसी सुजान का नाम ही इस कविता में प्रेम-रसायन का सार प्रतीक है। यह नाम उनके चेतन अवचेतन मन में बस गया है कि किसी भी स्थिति में छूटने का नाम नहीं लेता है। प्रेम का उदात्त आदि बिंब ही घनानंद की कविता में झिलमिलाता है और यह बिंब ही राधा, कृष्ण, सुजान के रूप में भाव लोक की ~~स्वच्छंद~~ स्वच्छंद सृष्टि करता है। प्रेम में नारी रति के प्रति रुका आकर्षण रहने के कारण यह काव्य अधिकांशतः शृंगार की कोटि में आता है, भक्ति की

कोटि में नहीं। हालांकि सच यह है कि विरक्त घनानंद सखी भाव के भक्त और ब्रजरस में मगन होकर कीर्तन, रासलीला तथा भ्रमण गायन करते थे।

घनानंद में प्रेम का भावपक्ष पूरी तरह मौजूद है। घनानंद की 'इश्कलता' और 'वियोगबेलि' रचनाओं के प्रेम में प्रत्यक्ष रूप से वैष्णव प्रेम परंपरा और अप्रत्यक्ष रूप में फारसी की प्रेम परंपरा का असर है।

प्रेम के विषय में घनानंद ने जो धारणा अभिव्यक्त की है उसके अनुसार प्रेम का मार्ग बहुत सीधा और सरल होता है, इसमें चालाकी, चतुराई या लोभ की जगह नहीं होती।—

"अति सूधो सनेह को मारग है,
जहाँ नेंक सयानप बांक नहीं।"

घनानंद के प्रेम में प्रतिदान की चाह नहीं है। उनका प्रेम एकपक्षीय है। प्रकारांतर से यह भी लगता है कि उनका प्रेम सात्विकता (पवित्र भाव) से जुड़ा है।

घनानंद की विरह-व्यथा में हृदयानुभूति का वेग बहुत अधिक है। स्थिति यहाँ तक पहुंचती है कि प्रिय मारकर जीवित करता है और जीवित करके मारता है। प्रिय के आते ही महारस छा जाता है।

कुल मिलाकर यही कहा जा सकता है कि घनानंद का लौकिक, शारीरिक एवं मानसिक प्रेम अंत में अलौकिकता से जुड़ जाता है।

- डॉ॰ आरती प्रसाद
सह प्राचार्य, हिन्दी-विभाग
मो॰ नं॰-9955839898

Scanned with CamScanner